Chp- Hindi 2019-20

आधुनिक हिन्दी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि

संपादक

डॉ. प्रवीण चन्द्र बिष्ट

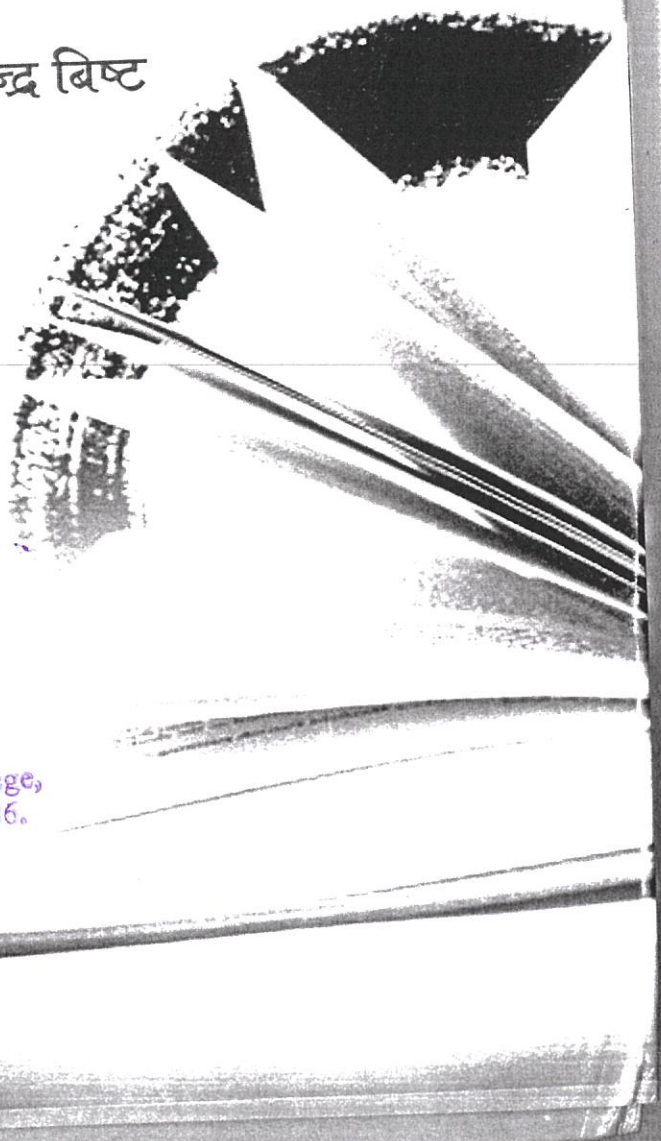

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

आधुनिक हिन्दी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि

संपादक
प्रवीण चन्द्र बिष्ट
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
रामनारायण रुइया स्वायत्त महाविद्यालय
मटुंगा, मुम्बई-400017

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

पुस्तक
वाली इ
में व्यत
प्रयास
आलेख
चंद्र बि
की वै
आर्मी
सरणि
गाँधी
आदि
का
साहि
महत
लेख

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2019

ISBN 978-81-942507-1-5

नमन प्रकाशन
4231/1, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002
फोन: 23247003, 23254306

श्री नितिन गर्ग द्वारा नमन प्रकाशन के लिए प्रकाशित तथा
एशियन ऑफसेट प्रिंटर्स, मौजपुर, शाहदरा, दिल्ली में मुद्रित।

Adhunik Hindi Sahitya Ki Vaicharik Prasthbhumi
By Dr. Pravin Chandra Bisht

Certified as
TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

भूमिका

साहित्य का जीवन से प्रभावित होना और जीवन को प्रभावित करना एक सहज-स्वाभाविक प्रक्रिया है। किंतु यह तभी संभव है जब साहित्य जीवन में व्याप्त विसंगतियों-विद्रूपताओं को उद्घाटित करते हुए स्वस्थ-समाज और जीवन के निर्माण में अग्रसर हो। ऐसे साहित्य की निर्मिति में रचनाकार की सामाजिक प्रतिबद्धता एवं प्रगतिशील विचारधारा का महत्वपूर्ण योग होता है और इस विचारधारा का निर्माण साहित्यकार द्वारा अपने समय के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में आ रहे बदलावों से प्रेरणा ग्रहण कर तमाम सहमतियों-असहमतियों को खँगालते हुए समाज और मानव जीवन के हित में एक निष्कर्ष तक पहुँचने की प्रक्रिया के दौरान होता है। इस तरह साहित्य-सृजन की प्रक्रिया में विचार तत्व की महती भूमिका होती है। हर रचनाकार अपनी रचनाओं के माध्यम से किसी न किसी विचार तत्व को संप्रेषित कर अपने समय और समाज को समृद्ध, समुन्नत और सचेतन बनाने का प्रयास करता है।

आधुनिक हिंदी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि में वे परिस्थितियाँ और कारक तत्व ही रहे हैं, जिन्होंने आधुनिक भारत के निर्माण की प्रक्रिया शुरू की। इसमें कोई संदेह नहीं है कि पश्चिमी देशों के संपर्क में आने के बाद ही भारतीय समाज में आधुनिकता का प्रवेश हुआ। सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में जिस तरह ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, थियोसॉफिकल सोसायटी, सत्यशोधक समाज आदि ने सामाजिक कुरीतियों एवं धार्मिक अंधविश्वासों आदि के विरुद्ध चेतना जगाने का प्रयास किया तथा शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में नई पहल की उससे इस प्रक्रिया को निरंतर गति मिलती रही।

महर्षि कर्वे, महात्मा फुले और आंबेडकर ने जहाँ दलितों-वंचितों को शिक्षित एवं जागरूक बनने की प्रेरणा दी, वहीं रमाबाई जैसी महिलाओं ने स्त्री शिक्षा पर बल दिया। 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम सेनानियों ने जहाँ अंग्रेजी साम्राज्य

के शोषण और अत्याचार के विरुद्ध बिगुल बजाया वही आगे चलकर तिलक,गाँधी, सुभाष चंद्र बोस और भगत सिंह आदि ने स्वाधीनता की चेतना को प्रखरता प्रदान की। इन नेताओं और स्वतंत्रता सेनानियों में वैचारिक अंतर भले ही रहा हो, लेकिन सबका लक्ष्य एक था, आजादी। इन सबकी विचारधारा का प्रभाव आधुनिक हिंदी साहित्य में स्पष्ट दिखाई देता है। भारतेंदु और द्विवेदी युग में जहाँ नवजागरण का प्रभाव है, वही 1920 के बाद गांधी की विचारधारा अधिक मुखर हुई है।

पश्चिमी शिक्षा और जीवन-शैली ही नहीं पाश्चात्य विचारकों ने भी भारतीय मनीषा को काफी हद तक प्रभावित किया है। विशेष रूप से मार्क्स के विचारों से प्रभावित रचनाकारों का एक बड़ा वर्ग 1936 के बाद से अब तक लगातार रचनारत है। इसके अतिरिक्त फॉयड, एडलर, युंग, सार्त्र, जैक देरिदा आदि ने भी अपने विचारों से हिंदी साहित्यकारों को प्रभावित किया है। स्वातंत्र्योत्तर रचनाकारों में स्वतंत्र भारत की स्थितियों के प्रति मोहभंग के कारण उत्पन्न व्यवस्था-विरोध की प्रबल भावना भी मिलती है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में वर्ण-जाति की अवधारणा प्रबल रही है। वर्ण-व्यवस्था के अनुसार दलित समाज सदियों से शोषित-पीड़ित एवं प्रताड़ित-अपमानित होता रहा है। फुले-अम्बेडकर की विचारधारा ने इस वर्ग के रचनाकारों को बेहद प्रभावित किया एवं दलित चेतना का साहित्य अपनी अलग पहचान बना सका। दलितों की भांति आदिवासी समाज के अस्तित्व की रक्षा का संकट भी चिंतन का एक अहम विषय रहा है। इसी तरह महिला अधिकारों के प्रति सजग स्त्री-रचनाकारों की एक पूरी पीढ़ी स्त्री को उसकी अस्मिता, स्वतंत्रता एवं अधिकारों के लिए सचेत करने का कार्य कर रही है। 1990 के वाद वैश्वीकरण ने भारतीय जनमानस ही नहीं, संपूर्ण विश्व को प्रभावित किया है। संचार क्रांति एवं इंटरनेट ने पूरे विश्व समुदाय को अपनी चपेट में ले लिया है। इसके अच्छे-बुरे दोनों परिणाम हुए हैं, जिन पर रचनाकारों ने अनवरत विमर्श किया है। साहित्य का संबंध समग्र मानव जीवन की अनुभूतियों से होता है। अतः मानव जीवन को प्रभावित करने वाले पर्यावरण, किन्नर विमर्श, बाजारवाद एवं प्रवासी-विमर्श आदि अनेक विचार बिंदु हैं, जिनका प्रभाव आज के साहित्य पर पड़ा है।

डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट द्वारा संपादित इस पुस्तक में आधुनिक हिंदी साहित्य को प्रभावित करने वाली इन सभी विचारधाराओं को विभिन्न विधाओं में व्यक्त, चिंतन के माध्यम से समझने का सार्थक प्रयास किया गया है। यद्यपि एक परिसंवाद में आए आलेखों की कुछ सीमाएँ होती हैं लेकिन डॉ प्रवीण चंद्र बिष्ट

ने बड़ी चतुराई से आधुनिक हिंदी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि से जुड़े आलेखों को इस तरह आमंत्रित एवं संपादित किया है कि सभी विचार सरणियों का परिचय मिल जाता है। नवजागरण, गाँधीवाद, मार्क्सवाद, नारी-विमर्श, दलित-विमर्श, आदिवासी, भूमंडलीकरण और प्रवासी विमर्श आदि का विवेचन करते हुए ये आलेख आधुनिक हिंदी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि समझने की दिशा में महत्वपूर्ण कड़ी सिद्ध होंगे। इसके लिए संपादक एवं लेखकों को साधुवाद। अस्तु।

डॉ. सतीश पांडेय
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी अध्ययन मंडल,
मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई।

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

अनुक्रम

भूमिका 5

1. अध्यक्षीय वक्तव्य : साहित्य और विचारतत्व 11
डॉ. देवेश ठाकुर

2. भारतेन्दु पूर्व पत्रकारिता और जन जागरण 13
डॉ. प्रवीण चन्द्र बिष्ट

3. भारतेंदु युगीन पत्रकारिता और जन जागरण 21
डॉ. अरुणा दुबलिश

4. भारतीय नवजागरण के वैचारिक आधार 27
प्रो. दिनेश पाठक

5. नवजागरण के अग्रदूत : भारतेन्दु 33
डॉ. सत्यवती चौबे

6. नवजागरण काल और महावीर प्रसाद द्विवेदी 39
प्रा. भारती देशमुखे

7. नवजागरण और महादेवी वर्मा 43
डॉ. उषा मिश्रा

8. जाति के प्रश्न और हिंदी नवजागरण 49
डॉ. बजरंग बिहारी तिवारी

9. गाँधीवाद और हिन्दी कविता 56
श्यामसुंदर पाण्डेय

10. गाँधीजी की विचारधारा के प्रमुख सूत्र और प्रेमचंद की कहानियाँ 62
डॉ. शीला आहुजा

11. हिन्दी कथा-साहित्य पर गाँधीवाद का प्रभाव 69
डॉ. भगवती प्रसाद उपाध्याय

12. प्रगतिशीलता बनाम प्रगतिवाद 72
डॉ. अन्नपूर्णा सिसोदिया

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

13. सुनूँ क्या सिंधु ! मैं गर्जन तुम्हारा ? 76
प्रोफेसर वशिष्ठ अनूप
14. नारी विमर्श : (अनामिका के विशेष संदर्भ में) 82
श्रीमती तबस्सुम ख़ान
15. आधुनिक उपन्यासों में नारी के विविध रूप 89
डॉ. आशा नैथानी दायमा
16. भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में नारी के विविध रूप 94
श्रीमती शोभा जोशी
17. शिवानी के उपन्यासों में नारी के विविध रूप 98
डॉ. शैलेशकुमार दुबे
18. शैलेश मटियानी के उपन्यासों में पहाड़ी जीवन संघर्ष 103
मोनिका पन्त
19. आदिवासी विमर्श और समकालीन हिंदी कहानी 111
डॉ. सतीश पांडेय
20. 'दलित चेतना' की एक बदलती सोच 118
डॉ. श्रीमती मिथिलेश शर्मा
21. हिंदी दलित साहित्य में वैचारिक मुद्दों का विवेचन और विश्लेषण 126
प्रा. प्रकाश एम. आठवले
22. समकालीन हिन्दी कहानी में दलित संवेदना 130
डॉ. हीरल शादिजा
23. वैश्वीकरण का भाषा, साहित्य और समाज पर प्रभाव 135
डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय
24. वैश्यिक सन्दर्भ में हिंदी 145
डॉ. राहुल उठवाल
25. वैश्विक हिंदी की भावी चुनौतियाँ 151
डा. राजेश्वर उनियाल
26. भूमण्डलीकरण और समकालीन कविता 160
डॉ. रमेश कुमार
27. वैश्विक हिंदी साहित्य और प्रवासी साहित्यकार 164
प्रो. रीना सिंह

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

मंचस्थ विद्वत्गण, इस साहित्यिक
प्रेमी उपस्थित श्रोताओं को मेरा
आयोजन में उपस्थित हुआ हूँ,
विभागाध्यक्ष डॉ. प्रवीण चन्द्र बि
दो शब्द कहने का अवसर दिया
और अपनी पत्नी की स्वास्थ्य
साहित्यिक आयोजनों में भाग
लगभाग बंद-सा हो गया है। बं
याद नहीं आते। वाक्य रचना
एक लिखित टिप्पणी द्वारा बा
मेरी सोच और मेरा ले
भाषणों और अपने लेखन में
हूँ कि साहित्यिक लेखन क
विषमताओं और विद्रूपताओं
मनुष्य मात्र के लिए सार्थक
सही, सार्थक और सप
वास्तविकताओं का निदर्शन
अपार समस्याओं से जूझते
सकता है। जो रचना इस
कहलाती है। वैसे हम जान
आशा-निराशा, सफलता-अ

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

20.

'दलित चेतना' की एक बदलती सोच

डॉ. श्रीमती मिथिलेश शर्मा

'दलित' शब्द किसी परिचय का मोहताज नहीं है। स्वयं दलित शब्द भारतीय समाज के उस वर्ग के लिए रूढ़ हो गया है—जो व्यवस्था की मार से दबा, कुचला हुआ है। वास्तव में, दलित चेतना पर आज बात करना इतना सहज नहीं है जितना कि हम पढ़कर सोचते हैं। प्रायः दलित शब्द की विद्वानों ने अलग-अलग ढंग से व्याख्या की है।

भारत में आजादी से पूर्व 'दलित' शब्द का प्रयोग हो रहा है और तभी से यह शब्द विवाद के घेरे में रहा। 'दलित' शब्द की उत्पत्ति 'दल' धातु से हुई, जिसका अर्थ है—कहना, खंडित होना आदि।

प्रोफेसर राजमणि शर्मा के अनुसार—"दलित शब्द संस्कृत-हिंदी, हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोशों में मिलता है। जहाँ इसका अर्थ—टूटा हुआ, पिसा हुआ, कटा हुआ आदि दिया गया है"। अंग्रेजी में इसका अर्थ डिप्रेस्ड क्लास, मराठी में विनिष्ट किया हुआ। हिन्दी शब्दकोशों में मराठी के अनुकरण पर-दबाए हुए, पद दलित, सताये हुए लोग, कालान्तर में इन्हीं शब्दों के आधार पर अर्थ को स्वीकार किया गया :

संत कबीरदास, रविदास, बाबासाहेब आम्बेडकर, महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्री फुले एवं पेरियार के सामाजिक परिवर्तनों के, आंदोलनों के संघर्ष स्वरूप सन् 1960 में महाराष्ट्र की भूमि पर 'दलित चेतना' के नाम पर जो क्रांतिकारी साहित्य रचा, वे संपूर्ण भारत में ही नहीं बल्कि विश्व धरातल पर अपनी छाप छोड़ रहा है।

बाबा साहेब आम्बेडकर के सपनों के अनुरूप भारत को खुशहाल बनाने के लिए शोषित व उपेक्षित लोगों में चेतना जगाना जरूरी है ताकि वे अपने अधिकारों की लड़ाई स्वयं लड़ सकें।

'दलित चेतना' डॉ. आम्बेडकर द्वारा निर्मित जीवन दर्शन को स्वीकार करती है। प्रायः सभी दलित लेखक इस तथ्य पर एक मत हैं। 'दलित चेतना' के कुछ खास मुद्दे हैं, जिन्हें लेकर वे आगे प्रस्थान करती है। जैसे—"मुक्ति और स्वतंत्रता के सवालों पर डॉ. आम्बेडकर के दर्शन को स्वीकार करना। बुद्ध का अनीश्वरवाद, अनात्मवाद, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, पाखंड व कर्मकांड का विरोध। भाई-चारे का समर्थन, स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय की पक्षधरता, आर्थिक क्षेत्र में पूँजीवाद का विरोध, सामंतवाद या ब्राह्मणवाद का विरोध, अधिनायकवाद का विरोध, भाषावाद, लिंगवाद का विरोध"। 1 (दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र, संकलन—ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृष्ठ 3)

लगभग पाँच दशक पहले मराठी में जिस 'दलित' साहित्य की चर्चा शुरू हुई, वही गूँज 1980 के आस-पास हिंदी में भी सुनाई दी। 'दलित' शब्द ने जब दलित साहित्य का रूप धारण किया तो वह 15 प्रतिशत जनता का साहित्य न रहकर, 85 प्रतिशत जनता का साहित्य बन गया।

यहाँ तक 'दलित विमर्श' की एक वैचारिक भूमिका रही, जो पूरी तरह पुस्तकीय आधारों पर थी। पर, अब ऐसा लगता है कि हमें किताबों की भूमिका से उठकर देखने की आवश्यकता है और नए मानदंडों पर 'दलित विमर्श' या 'दलित साहित्य' की व्याख्या करने की आज जरूरत है।

आज भी हम 'दलित विमर्श' के उन्हीं दुखों का रोना अलापते रहें जो पूर्व सदी में थे तो यह कहीं न कहीं गलत होगा। एक समय था जब जातिगत भेदभाव बहुत जोरों पर था किंतु आज सभी के लिए सामान दरवाजे खुले हुए हैं। जरूरत है, अपनी मेहनत, ईमानदारी और शिक्षा की। इनके चलते कोई मंजिल दूर नहीं होती। ऐसी ही कुछ जीती-जागती कहानियाँ मिलिंद खांडेकर की पुस्तक में हैं।

2013 में प्रकाशित "दलित करोड़पति" पुस्तक में पन्द्रह कहानियाँ हैं। ये कहानियाँ काल्पनिक नहीं हैं, हकीकत है। ये उन लोगों की कहानियाँ हैं जिन्होंने सड़क से आसमान तक का सफर स्वयं तय किया है, किसी की मेहरबानी पर नहीं।

कहानियों के शीर्षक इस प्रकार हैं—

1. पलाश का एक पत्ता
2. कल्पना की उड़ान
3. बॉयकाट को मात
4. पैसे पेड़ पर
5. कोयले से बदलती किस्मत

6. रंक से राजा बनने का सफर
7. सफलता की साइंस
8. सफलता का यार्न
9. घर छोड़ा दुनिया पाई
10. मेड इन जापान
11. गोबर चौकी से ताज प्लाजा
12. अरमानों की उड़ान
13. इडली की इंजीनियरिंग
14. चाल से निकली सफलता की इमारत
15. एक मीठा सपना मेरा भी

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

यह सभी प्रेरणादायक कहानियाँ है, पर सभी का वर्णन करना संभव नहीं है। अतः चार कहानियों को उदाहरण स्वरूप लिया गया है।

'पलाश का एक पत्ता' जिसके मुख्य नायक हैं अशोक खांडे जो महाराष्ट्र के सांगली जिले के पेण गाँव के हैं। उनके पिता दादर (मुंबई) में जूते ठीक करने का काम करते थे। माँ तान्हू बाई बारह आने रोज पर मजदूरी करती थी। छह भाई-बहनों के परिवार का गुजारा इतनी कम आमदनी से नहीं हो पाता था। अशोक को अपने परिवार की गरीबी का कोई अंदाज नहीं था। उन दिनों एक ऐसी घटना घटी जिसे देखकर या सुनकर सबकी रूह काँप उठी। अशोक इस समय पाँचवी कक्षा का विद्यार्थी था। बरसात का मौसम था। माँ ने अशोक से चक्की से आटा लाने को कहा। आटा लाते समय अशोक का पैर कीचड़ में फँस गया और पूरा आटा गिर गया। माँ को बताया तो माँ रोने लगी क्योंकि घर में और आटा नहीं था। माँ ने पडोस के घर से भुट्टे और काले हुलगे (एक प्रकार का अनाज) लाई और भाकरी बनाकर बच्चों का पेट भरा, खुद कुछ नहीं खाया। सुबह चार बजे छोटे भाई सुरेश की भूख के कारण नींद खुल गयी। माँ ने कहा—"अभी सो जाओ, उजाला होने पर कुछ करती हूँ"। एकाध घंटे बाद, माँ ने कुछ बीजों को पीसा और उसकी भाकरी बनाकर, सुरेश को खिला दी। रोटी किस चीज की बनाई थी यह सिर्फ माँ ही जानती थी। पर, इस घटना ने अशोक को खूब अंदर तक हिला दिया था। अशोक ने जैसे-तैसे ग्यारहवीं पास कर ली लेकिन आगे की पढ़ाई कैसे हो? यह एक बड़ी समस्या थी। 1970 में महाराष्ट्र में सूखा पड़ा जिसके चलते 1972 तक हालात बहुत खराब हो चुके थे। न पीने को पानी, न खाने को अनाज। सरकारी योजनाएँ काम कर रही थी पर कितने समय तक...?

अशोक जिस हॉस्टल में पढ़ रहे थे वहां अनाज की सप्लाई रुक गई, घर से खाने का इंतजाम नहीं हो सकता था। अशोक जब अपने पिता से मिलने गाँव गए तो पिताजी ने कहा—"बेटा, यह अकाल मैंने नहीं लाया है। मैं तुम्हें भाकरी नहीं खिला पा रहा, इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। घर के सारे बर्तन बिक गए हैं पर तुम हार मत मानना"। फिर मराठी का एक मुहावरा कहा जिसका अभिप्राय यह है कि - बिना बर्तन के पत्ते पर खाना खाया जा सकता है किंतु पत्तल भी न हो तो कुछ नहीं हो सकता। इस किस्से ने अशोक को जिंदगी से लड़ने का हौसला दिया। अशोक के खाने-कपड़े का इंतजाम पाटिल परिवार ने किया। इस प्रकार पढ़ाई भी खत्म हुई। अशोक डॉक्टर बनना चाहते थे पर हालात ने डॉक्टर बनने नहीं दिया। बिल्डिंग अप्रेंटिस से ड्राफ्ट्समैन बन गए। पर, सपने अभी बाकी थे। अब उन्होंने पार्ट टाइम मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू की। डिप्लोमा की डिग्री पाकर, ड्राफ्ट्समैन की नौकरी छोड़कर, क्वालिटी कंट्रोल में ट्रांसफर ले लिया। खूब जमकर मेहनत की। इसी विभाग के तहत उन्हें जर्मनी जाने का भी अवसर प्राप्त हुआ। जीवन में कई मोड़ आए और तब उन्हें लगा कि नौकरी से कुछ होने वाला नहीं है। इसी सोच के साथ "दास ऑफशोर इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड" की नींव पड़ी। आज अनेक बड़ी कंपनियों के प्रोजेक्ट करते हैं जिनमे से कुछ—ओ. एन. जी. सी., ब्रिटिश गैस, कोरिया की हुंडई, ऑस्ट्रेलिया की लेगटेन, एल. एन. टी. आदि। ये सारा काम नवी मुंबई के एमआईडीसी में, 55000 स्क्वायर फुट में फैले फैब्रिकेशन यार्ड में होता है। इस यार्ड में करीब चार सौ लोग काम करते हैं। मुंबई का पहला स्काई वॉक बांद्रा में इसी कंपनी ने बनाया है। आज उनके पास सब कुछ है। उनका कहना है कि—"कभी हार मत मानो पलाश के पत्ते बिना पानी के लगते हैं"।

'कल्पना की उडान' दूसरी कहानी है। इस कहानी में कल्पना सरोज के जीवन का ऊहापोह है। 12 वर्ष की उम्र में विवाह के बाद, पहली बार कल्पना ने मुंबई की भूमि पर अपना कदम रखा पर ससुराल की परेशानियों ने उसके पैर मुंबई की भूमि पर जमने नहीं दिये। तंग आकर कल्पना अपने गाँव रूपरखेड़ा (महाराष्ट्र में अकोला के पास) लौट आई। अपने गाँव वालों ने भी उसे कम बुरा-भला नहीं कहा। कल्पना को कुछ समझ में नहीं आ रहा था क्या करे? पर, अपना भविष्य उसे अंधकार में दिखाई दे रहा था। घरवालों की बदनामी को लेकर कल्पना बहुत दुखी रहती थी। मामा के शब्द लड़की 'जहर की पुड़िया' होती है, बार बार गूँजते थे। जिंदगी से तंग आकर एक बार चूहे मारने की दवा भी खा ली किन्तु जीवन

शेष था। अतः समय पर डॉक्टरी इलाज से बच गई। समाज की बेरहमी उनके प्रति और बढ़ गई थी जिसे सहना कल्पना के लिए असहनीय हो चुका था। पिता महादेव पुलिस में थे, अतः उन्होंने पुलिस में भर्ती होने की कोशिश भी की। उम्र कम होने के कारण वहाँ भी विफल रही। न वह मैट्रिक कर पाई और न ही नर्स बन सकी। जब सभी कोशिशें नाकाम रही तब घर में उन्होंने सिलाई का काम किया। पर, इससे उनका जीवन चलने वाला नहीं था। उन्होंने अपने पिता से पुनः मुंबई जाने की जिद की, पिता के मना करने पर मरने की धमकी दी तो माता-पिता राजी हो गए।

दोबारा अपनी जिंदगी को सँवारने के लिए कल्पना पुनः मुंबई आई। उनके मामा दादर की झोपडियों में रहते थे। उनके पास अपनी भाँजी को रखने की जगह नहीं थी अतः एक गुजराती परिवार से प्रार्थना कर उनके यहाँ रखवा दिया। थोड़े पैसे आने के बाद, कल्पना ने अपना जीवन सँवारना शुरू किया और कल्याण में किराये पर घर ले लिया साथ ही सिलाई मशीन भी खरीद ली। दिन में फ़ैक्ट्री में काम करती और रात में घर पर सिलाई। कठिन परिश्रम से उसके दिन सँवर रहे थे कि अचानक पिताजी को किसी गलत आरोप में सस्पेंड कर दिया गया। तब परिवार की जिम्मेदारी भी उस पर आ गई। वह परिवार को अपने साथ ले आई और छोटी बहन ने बीमारी के दौरान आर्थिक तंगी के कारण दम तोड़ दिया। तब उसे लगा कि सिर्फ सिलाई करके जीवन नहीं चलाया जा सकता और कल्पना ने व्यापार करने का निश्चय किया। व्यापार बिना पैसे के नहीं हो सकता किंतु जब इरादे बुलंद हो तो रास्ते भी खुल जाते हैं, और ऐसा हुआ भी। कल्पना को एक व्यक्ति की मदद से पचास हजार रुपये का इलाहाबाद बैंक से कर्ज मिला और उन्होंने फर्नीचर की दुकान शुरू की। इसके बाद उन्होंने 'सुशिक्षित बेरोजगार युवक संघटना' बनाई। जिसके तहत बेरोजगार युवकों को एक करोड़ से लेकर अस्सी लाख रुपये का कर्ज बैंकों से दिलवाया। दूसरों की मदद करने की सोच ने ही कल्पना को बिजनेस में खड़ा किया ।

कल्पना ने अनेक संघर्षों से लड़ते हुए, कल्याण में 'कोहिनूर प्लाजा' बनाया। ढाई लाख में खरीदी जमीन की कीमत साढ़े चार करोड़ हो गई। कल्पना रातों- रात करोड़पति बन गई। कई बार 'दलित' होने के नाते उन्हें कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ा। 'कल्पना बिल्डर्स' अब तक आठ इमारतें बना चुका है। अनेक मुसीबतों से जूझने के बाद 'कमानी ट्यूब्स' कंपनी आज उनके पास है 2013-14 में कंपनी का लक्ष्य तीन हजार टन प्रति वर्ष का उत्पादन करने का है।

Certified as
TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

कंपनी के डायरेक्टर एम. के. गोरे कहते हैं कि—कल्पनाजी सिर्फ भारत के बाजार में ही नहीं सोचती हैं, वो कहती हैं—हमारा कॉम्पिटिशन देश के भीतर किसी से नहीं है बल्कि यह चीन से है। इस होड़ का मुकाबला करने के लिए उन्होंने कुवैत में अल- कमानी कंपनी बनाई है। कमाने के बड़े ग्राहक तेल उद्योग में हैं। कुवैत की कंपनी शीघ्र ही उनके ऑर्डर पूरे कर पाती है। यह कंपनी भारत में बने ट्यूब्स का स्टॉक रखती है और दो दिनों में सप्लाई कर पाती है। इतना ही नहीं, ट्यूब्स के लिए कच्चा माल अर्थात तांबा खरीदने के लिए उन्होंने अफ्रीकी देश "डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो मेटल किंग" कंपनी बनाई है जो कमानी के लिए ताम्बा खरीदेगी। कांगो में दुनिया का ताम्बे का दूसरा सबसे बड़ा भंडार है। कल्पना के पास वाड़ा में एक और फैक्ट्री है जिसमें स्टील के सरिये बनाए जाते हैं। कंस्ट्रक्शन के काम को कल्पना सिर्फ कल्याण, डोम्बिवली तक सीमित न रख मुंबई शहर में फैलाना चाहती है। इसके अतिरिक्त उनके पास अन्य कई योजनाएँ है। आज उनका भरा पूरा परिवार है। भारत सरकार ने कल्पना के काम की सराहना करते हुए उन्हें 2013 में पद्मश्री से सम्मानित किया। कल्पना अपना प्रेरणा स्रोत बाबासाहब आम्बेडकर को मानती हैं। उनका कहना है—रोने-धोने के दिन गए। जब मैं महिला होकर, कम पढ़ी-लिखी होकर सब कर सकती हूँ तो दूसरे क्यों नहीं? आज इंटरनेट की दुनियाँ है। सब कुछ संभव है।

तीसरी कहानी 'पैसे पेड़ पर' यह कहानी लुधियाना की है खांडेकर लिखते हैं कि लुधियाना की सड़कों पर कार चलाते हुए मलकित चंद ने बताया कि जब वह तीन साल के थे तब उनकी माँ स्वर्णी देवी सिलाई का काम करती थी पर पड़ोसियों से सिलाई का पैसा नहीं लेती थी। पड़ोस की सुगना देवी का सूट उन्होंने बनाया था और मलकित को सूट देने भेजा तो सगुना मौसी ने सूट की सिलाई का एक रुपया दिया। माँ ने रुपया वापस भिजवाया मगर सगुना मौसी ने रुपया नहीं लिया। इस प्रकार दो तीन बार इधर-उधर जाकर मैंने नोट के टुकड़े कर जमीन में बो दिया। सोचा, पैसे उग आएंगे तो माँ और मौसी दोनों की परेशानी खत्म हो जाएगी।

मलकित रोज उठ कर पैसे के पेड़ को पानी देते थे, पैसे तो उगे नहीं पर पोल खुल गई। खैर. . आज उनकी बड़ी फैक्ट्री है जिसमें करीब डेढ़ सौ मजदूर काम करते हैं। जिसमें होजरी के लिए कपड़े बनाने से लेकर सिलाई तक का पूरा काम होता है। जिसमें प्रतिदिन पाँच हजार टीशर्ट बनाई जाती हैं। उनकी दो कंपनियाँ हैं—1. जनागल एक्सपोर्ट (जो विदेश में माल बेचती है), 2. लिटिल

मास्टर (जो देश में माल बेचती है)। जनागल का सालाना टर्नओवर सत्तर करोड़ रुपये है, जबकि लिटिल मास्टर का छह करोड़ रुपये। मलकित के पिताजी जो कटर मास्टर थे, उन्होंने मलकित को डॉक्टर बनाना चाहा था पर पिताजी की गाढ़ी कमाई को देखकर मलकित को डॉक्टर बनना रास नहीं आया। उसने सोचा पिताजी दूसरे के यहाँ काम करके महीने की पहली तारीख को दस हजार लाते हैं। अगर, हमारी अपनी फैक्ट्री हो तो हम कितना कमा सकते हैं? जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आये पर सफलता भी हासिल की। आज वे चाहते हैं कि दूसरे लोग जो कमजोर (दलित) वर्ग के हैं, उनके लिए संदेश है—"पढ़ाई करो, नशा मत करो। नशे की वजह से दलित युवक बर्बाद हो जाते हैं। किसी चीज का नशा न हो तो आपको कमायाब होने से कोई नहीं रोक सकता।

चौथी कहानी "कोयले से बदलती किस्मत" यह कहानी सविताबेन की है जो अहमदाबाद में दस बाई दस वर्ग फुट की खोली में रहती थी। उनके पति म्युनिसिपल ट्रांसपोर्ट सर्विस में कंडक्टर की नौकरी करते थे। उनकी सैलरी 60 रुपये थी। इतनी सैलरी में तीन बेटे और तीन बेटियों के अतिरिक्त माँ-बाप का भी खर्च उठाना पड़ता था। ये करीब पचास साल पुरानी बात है। सविता के माता पिता कोयले का छोटा-मोटा व्यापार करते थे। अतः तीसरी कक्षा तक पढ़ी सविता कोयले के व्यापार के अलावा कर ही क्या सकती थी? माँ ने उन्हें कोयला देने से मना कर दिया। कहा कि "तुम कोयला बेचोगी तो लोग क्या कहेंगे।" माँ ने कहा "पैसे लो, कोयला नहीं मिलेगा।" अगर, सविताबेन उस दिन माँ से पैसे ले लेती तो उनकी समस्या खत्म नहीं होती बल्कि बढ़ जाती। पर, उन्होंने वैसा नहीं किया। अतः आज वे सविताबेन देवजीभाई परमार के नाम से नहीं बल्कि पूरे गुजरात में सविताबेन कोलसा वाली के नाम से जानी जाती हैं। सविताबेन का सिद्धांत था—"अगर पैसे महीने में हर टन पर सौ रुपये मिले तो उससे अच्छा है तीस रुपये टन पर मुनाफा करो, पर पैसा हाथों हाथ लो।"

जीवन के अनेक उतार चढ़ाव के बाद उनके पास (1988 में) कप प्लेट बनाने का कारखाना है जो किसी ब्रांड के नाम से नहीं हैं पर महीने में पाँच लाख का माल खप जाता है। इसके अलावा सिरेमिक टाइल्स की फैक्ट्री है जिसमें दो सौ लोग काम करते हैं। उनका परिवार एक सोने की खरीद फरोख्त का भी कारोबार करने जा रहा है, लाइसेंस के लिए अर्जी दी है। आज वह कोयले का व्यापार नहीं करती हैं पर टाइल्स की फैक्ट्री उनकी देखरेख में चलती है। उनका कहना है—"किसी से भीख मत माँगो, सरकार से भी नहीं। नौकरी न करके अपना काम

करो। जाति सिर्फ आपके एरिया में है। दूर जाकर काम करो जहाँ कोई तुम्हें जाति से न पहचाने"।

प्रायः कहानीकार दलित वर्ग के पिछड़ेपन का रोना अलापते हैं कभी समाज को दोषी ठहराते हैं तो कभी राजनीति को और फिर बात अपनी जाति पर आकर ठहर जाती है पर समाज में ऐसे भी लोग हैं जिन्होंने अपनी मेहनत पर अपने आप को सिद्ध किया है।

21वी सदी बदलावों की सदी है। समय के साथ आज समाज की व्यवस्था व तकनीक में भी तेजी से परिवर्तन आया है। इन परिवर्तनों ने मानव जीवन के विविध पहलुओं को प्रभावित किया है और बदलते परिवेश ने एक नई सोच को भी जन्म दिया है। जिसके फलस्वरूप आज 'दलित' शब्द का तात्पर्य किसी वर्ग विशेष से न होकर, कमजोर वर्ग से है। चाहे वह वर्ग किसी भी जाति का हो। प्रत्येक वर्ग के अंदर अमीर और गरीब लोग हैं। गरीब व्यक्ति भी कोशिश करने पर अपनी लगन व परिश्रम द्वारा उन मुकामों तक पहुँच सकता है जहाँ दूसरे लोग हैं। आवश्यकता है, प्रयत्न की, परिश्रम की, व आशावादी दृष्टिकोण की। इनके चलते किसी भी मंजिल पर पहुँचना यदि सहज नहीं है तो नामुमकिन भी नहीं।

ये कहानियाँ उन करोड़पतियों की हैं जो कभी अपनी छोटी-छोटी जरूरतों के लिए दूसरों पर आश्रित थे। लेकिन, आज उनकी अपनी कंपनियाँ हैं, सालाना करोड़ों रुपए का टर्नओबर है। पर, यह कामयाबी उन्होंने कैसे हासिल की? कितनी कठिनाइयां आई? और, कैसे उन पर विजय पाई? इन कहानियों में उन सभी की दर्द भरी दास्तान भी है, मर्मस्पशी व्यथा भी और जीवन की कठिन राह पर चलने की प्रेरणा भी।

अध्यक्ष-हिन्दी विभाग
रामनिरंजन झुनझुनवाला कॉलेज,
घाटकोपर (पश्चिम)
मुम्बई-400086

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.